Cert. No.:- 93.

हमारे श्रध्देय
डॉ. शिवाजीराव पाटील निलंगेकर
साहेब

महाराष्ट्र शिक्षण समिति, निलंगा, संचालित

महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

जिला. लातूर (महाराष्ट्र)

हिंदी विभाग और आजादी का अमृत महोत्सव समिति

तथा

भारतीय सामाजिक शास्त्र शोध संस्थान, नई दिल्ली (ICSSR, New Delhi)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (Offline Mode)

"स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान"

तिथि: १० जनवरी २०२३

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता हैं कि, प्रो./ डॉ./ प्रा./ श्री. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

महाविद्यालय राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर. के प्रतिभागी ने तिथि १० जनवरी, २०२३ को **स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान** विषयपर आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मे शोधालेख वाचक/ प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहकर सहयोग दिया हैं । इस उपलक्ष्य में प्रस्तुत प्रमाणपत्र सस्नेह प्रदान किया जाता हैं ।

शोधालेख का शीर्षक आधुनिक कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना

धन्यवाद...!

डॉ. ज्ञानेश्वर चौधरी	डॉ. भास्कर गायकवाड	डॉ. बालाजी गायकवाड	डॉ. गोविंद शिवशेट्टे	डॉ. माधव कोलपुके
समन्वयक, अंतरिक गुणवत्ता अश्वासक प्रकोष्ठ महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा	समन्वयक, आजादी का अमृत महोत्सव समिति, महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा	हिंदी विभागाध्यक्ष, महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा	संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा	प्राचार्य महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

Impact Factor-8.575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-A

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A

ISSN : 2278-9308 January, 2023

Impact Factor – 8.575 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January -2023

ISSUE No - (CCCLXXXIII) 383 -A

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. M.N. Kolpuke
Principal,
Executive-Editors
Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga Dist. Latur

Dr. Govind G. Shivshette
Editors
Department of Hindi Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A

ISSN : 2278-9308 January, 2023

INDEX-A

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य	डॉ आरती बंसल	1
2	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता	डॉ. अनिला मिश्रा	4
3	स्वतंत्रता आन्दोलन : नवजागरण में हिंदी साहित्य का प्रखर राष्ट्रवाद	डॉ. बोबडे जयंत ज्ञानोबा	8
4	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी फिल्म	प्रा.डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील	14
5	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी नाटक	डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार	16
6	स्वाधीनता आंदोलन मे हिंदी कवियों की भूमिका	प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले	21
7	भारतीय हिंदी फिल्मी गीतों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना	डॉ.शिवसर्जन होनाजी टाले	24
8	स्वतंत्रता संग्राम में सुभद्रा कुमारी चौहान का योगदान	प्रा. डॉ. मुल्ला मुस्तफा लायक	27
9	रेणु और मैला आँचल : स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में	डॉ. सिन्धु सुमन	31
10	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्म	डॉ.रेशमा गणेश लोंढे	35
11	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य	डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील	39
12	आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.कल्याण शिवाजीराव पाटील	43
13	रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना	प्रा. डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले	47
14	स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण काल	डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	51
15	राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत स्वाधीनता कालीन हिंदी काव्य	डॉ.विजय कुमार कुलकर्णी	54
16	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान	प्रा.डॉ.मधुकर राऊत	57
17	आजादी के आंदोलन में : पत्रिकओंका योगदान	डॉ.जे.ए.चौधरी	60
18	हिंदी उपन्यासों में राष्ट्रवाद	प्रा.संतोष शिवराज पवार	63
19	स्वाधीनता संग्राम और हिंदी पत्रकारिता	डॉ.बबन रंभाजीराव बोडके	66
20	स्वाधीनता आंदोलन और दलित नवजागरण	डॉ. रामेश्वर वरशिळ	69

21	स्वाधीनता संग्राम में हिंदी भाषा की भूमिका डॉ.शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद	73
22	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता डॉ. देविदास भिमराव जाधव	77
23	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य डॉ. भगवान गव्हाडे	81
24	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास डॉ. श्रीराम हनुमंत वैद्य	85
25	हिन्दी उपन्यासों में स्वाधीनता आन्दोलन का चित्रण शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम	89
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास प्रा.डॉ. सावते प्रकाश नवनितराव	92
27	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में भारतेन्दु हरिषचन्द्र के नाटकों का योगदान डॉ. मनीषा शर्मा	95
28	निराला के काव्य में स्वाधीनता की भावना प्रा.डॉ. प्रवीण कांबळे	100
29	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा प्रा. डॉ. बालिका रामराव काबंळे	103
30	हैदराबाद मुक्ति आंदोलन में हिंदी कविताओं का योगदान प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र	107
31	स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड	112
32	भारतेन्दुयुगीन निबंध साहित्य में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन डॉ. सुजितसिंह परिहार	117
33	स्वाधीनता आंदोलन के आलोक में 'शिव शंभू के चिट्ठे' की महत्ता प्रा.डॉ. संतोष कुमार गुंडप्पा गाजले	121
34	स्वधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा डॉ. पटेल माजिद भिकन	124
38	तार सप्तक काव्य में राष्ट्रीय चेतना प्रा. साईनाथ कोरेबोईनवाड	127
35	शहादत एकांकी में राष्ट्रिय चेतना प्रा सुधाकर वाघमारे	131
36	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर	134
37	भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों में राष्ट्रीयभावना प्रा. डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव	137
38	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और सुमित्रानंदन पंत का मुक्तियज डॉ मुकुंद कवडे	141
39	माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में राष्ट्रीयता का स्वर डॉ. प्रिया ए.	145
40	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी सिनेमा का योगदान डॉ.जी.बी.उषमवार	148
41	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान धनराज शिवदास बिराजदार	150

42	स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में हिंदी काव्य	प्रा.डी.आर भुरे	153
43	स्वाधीनता आंदोलन और यषपाल के हिन्दी उपन्यास	डॉ. कविता मीणा	159
44	स्वाधीनता की बुलंद आवाज....	सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे	162
45	आधुनिक कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना	प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	166
46	सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	येलणे देविदास गणेशराव	169
47	स्वाधीनता आंदोलन में रचित हिन्दी कविताओं से आती है वतन से इश्क की खुशबू	डॉ.खाजी एम.के.	172
48	स्वाधीनता आंदोलनऔर कविता	डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे	175
49	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान	डॉ. निभा शांतिलाल उपाध्याय	178
50	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी सिनेमा का योगदान	प्रा.डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड	183
51	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा	प्रा.डॉ. राम दगडू खलंग्रे	187
52	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी कविताएं	जहांगीर आलम, डॉ. अश्वनी	193
53	स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी उपन्यास	ज्योती रामराव सपकाळ	198
54	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा और भारतीयता धर्म का उद्बोधन करते भारतेंदु हरिश्चंद्र	डॉ. शेख मुखत्यार	204

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A

ISSN : 2278-9308

January, 2023

आधुनिक कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना

प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

सहा. प्राध्यापक,हिंदी विभाग,राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर.

दूरभाष : 9921708172 ई-मेल - srchavan1983@gmail.com

साहित्यिक विधा में कविता सदा से ही मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम रही है। लगभग डेढ़ सौ साल की अंग्रेजी हुकूमत की अन्यायी और साम्राज्यवादी नीतियों ने भारतीय जनमानस के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी पहलुओं को झकझोर डाला था। ऐसी दयनीय परिस्थिति से भारतीय समाज जब झुलस रहा हो तो युगीन साहित्य में उस समय की अभिव्यक्ति कैसे नहीं हो सकती? उस समय लिखी जा रही कविताएँ तो स्वतंत्रता आंदोलन की मिसाल हैं। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह का शंखनाद फूंकते हुए इस युग की कविता ने भारतीय जनता के मन को राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत किया। ताकि लोग हँसते-हँसते मातृभूमि के लिए अपना बलिदान दे। इन बलिदानियों में कुछ ऐसे भी थे, जो स्वयं साहित्यकार थे। इस युग की कविता आंदोलनकारी भूमिका से अपने आपको संस्कारित करती रही। इस युग में लिखी गई कविताएँ मात्र उस समय के जनाक्रोश और आकांक्षाओं को व्यक्त नहीं करती बल्कि आनेवाली पीढ़ी के लिए ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ का अभिषेक कर विद्रोह को व्यक्त करनेवाले कवियों में भारतेंदु युग के अनेक कवियों से लेकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के अनेक कवियों ने भी माँ भारती के स्वतंत्रता संग्राम में अंगारों के गीत लिखे। जिनमें भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', जयशंकर प्रसाद, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', आदि अनेक कवियों की वाणी से राष्ट्रप्रेम की चेतना का विकास होता रहा।

भारतेंदु हरिश्चंद्र जिनके नाम से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का पहला पड़ाव जाना जाता है। भारतेंदुके साथ-साथ भारतेंदु मंडल के साहित्यकारोंने भी राष्ट्रीय चेतना को अपनी कविता में अभिव्यक्ति दी। जिन्होंने हिंदी कविओं के लिए समय की महत्ता को केंद्र में रखते हुए राष्ट्रप्रेम की भावना की नींव डाली। स्वतंत्रता आंदोलन की चिनगारी सुलगाने का कार्य इसी युग के कवियों ने किया। आगे द्विवेदी युग में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी ने भारतीय संस्कृति और अस्मिता की चेतना को जागृत किया। जिनकी 'भारत-भारती' यह रचना राष्ट्रीय आंदोलन की 'गीता' कहलायी। मैथिलीशरण गुप्त जी अपनी कविता 'हे मातृभूमि' में मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता का भाव जताते हुए उसके प्रति समर्पित होने की भावना व्यक्त करते हैं-

"आते ही उपकार याद है माता तेरा,
हो जाता मन मुग्ध भक्ति भावों का प्रेरा
तू पूजा के योग्य कीर्ति तेरी हम गावें
मन होता है तुझे उठा कर शीश चढ़ावें"[1]

गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित सोहनलाल द्विवेदी जी की कविताएँ भी राष्ट्रप्रेम की आवाज को बुलंद करती हैं। वे अपनी कविता 'भैरवी' में भारतीयों को जगाने का संदेश देते हैं-

"जागो हे ! पांचाल निवासी, जागो हे! गुर्जर, मद्रासी
जागो हिंदू, मुगल, मराठे, जागो मेरे भारतवासी।
जननी की जंजीरे बजती, जगा रहे कड़ियों के छाले,

सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी, जागो ओ सोनेवाले॥"[2]

वे आगे मातृभूमि के लिए मर मिटने की भावना को जागृत करते हैं। उनकी कविता 'प्रयाण गीत' में यही भाव व्यक्त होता है-

"गगन उगलता आग हो
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,
अड़ो वहीं, गड़ो वहीं,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।
× × ×
अशेष रक्त तोल दो
स्वतंत्रता का मोल दो
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं, मरो नहीं
बढ़े चलो, बढ़ेचलो।"[3]

विदेशी सरकार का विरोध और जनक्रांति का यह सिलसिला आगे भी रुका नहीं। छायावादी कवियों ने भी विदेशी सत्ता को अपने कविताओं के माध्यम से ललकारा। उनका उद्देश्य था - आज़ादी, जो उनकी आत्मा को पुकार रही थी। जयशंकर प्रसाद 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' कविता में राष्ट्र के प्रति समर्पित होने का आवाहन करते हैं-

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,
प्रबुद्ध शुद्ध भारती-
स्वयंप्रभा समुज्वला
स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीर-पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञा सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।"[4]

सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाजी 'जागो फिर एक बार' इस कविता में अतीत का गौरव गान करते हुए भारतीय क्रांति के स्वर्णमय इतिहास का स्मरण दिलाते हैं। भारतीय जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाते हुए हमें हमारे अतीत का अहसास दिलाते है-

"शेरों की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार!
× × ×
पश्चिम की उक्ति नहीं -
गीता है, गीता है-
स्मरण करो बारबार
जागो फिर एक बार।"[5]

माखनलाल चतुर्वेदी तो राष्ट्रभक्ति के धधकते अंगार थे। वे एक ऐसे राष्ट्रभक्त थे जिनकी कलम भी राष्ट्र के प्रति निछावर थी और स्वयं भी स्वाधीनता आंदोलन में अनेक बार जेल गए। राष्ट्रप्रेम उनकी रगों में प्रवाहित होता रहा। उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में मातृभूमि के लिए मर मिटने की प्रखर जिजीविषा अभिव्यक्त होती है-

"मुझे तोड़ लेना वनमाली !
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।"[6]

जेल में असंख्य यातनाएँ सहते हुए भी जिनके कलम की धार और तीखी बनी उन कवियों में कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का नाम भी शीर्ष स्थान पर रहा है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को उन्होंने अपनी कविता में व्यक्त किया है। अंग्रजों के खिलाफ लड़ते-लड़ते अपने आपको कैसे समर्पित कर दिया था, उस मर्दानी झाँसी की वीरता उस समय के भारतीयों के लिए प्रेरणा थी।

"लक्ष्मी थी या दूर्गा थी वह, स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार।
बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूप लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"[7]

निष्कर्ष रूप में कहा जाय तो आधुनिक काल में विशेष रूप से भारतेंदु युग से लेकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा तक के कवियों के कविताओं में राष्ट्रप्रेम शोले बनकर व्यक्त हुआ है। समय ही महत्ता का ध्यान और अपनी मातृभूमि के प्रति निछावर होने की निस्सीम भावना इन कवियों के जीवन का हिस्सा बन गया था। इसीलिए इस युग के अनेक कवियों का अधिकतर समय जेलों में बीता। उनके इस निस्वार्थ समर्पण के कारण ही भारतीय जनता के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना जगी और अंग्रेजों का सिंहासन हिल उठा। जिसकी फलनिष्पत्ति सन् 1947 में मिली आज़ादी रही।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1) रावत अंजीव - राष्ट्रभक्ति गान, वैभव बुक डिस्ट्रीब्युटर्स, जयपुर, तृतीय संस्करण 2017, पृ. 12
2) वही, पृ. 36
3) वही, पृ. 37
4) पाठक वाचस्पति - प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण 1972, पृ. 67
5) संपा. शर्मा रामविलास - राग-विराग-निराला, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, संस्करण 2007, पृ. 58-59
6) 'प्रेमी' हरिकृष्ण - आज के लोकप्रिय हिंदी कवि माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, चौथा संस्करण 1970, पृ. 95.
7) प्रकाशन विभाग - आज़ादी की लड़ाई के जब्तशुदा तराने, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1998, पृ. 160.